ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

ई-लर्निंगः इलेक्ट्रॉनिक संसाधन का उपयोग एवं सूचना खोज की प्रवृति में अग्रसर गंथालय एक संक्षिप्त अध्ययन

E-learning: A Brief Study of Library Using Electronic Resources and Moving in the Trend of Information Search

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 21/11/2021, Date of Publication: 22/11/2021

शालिनी शुक्ला
पुस्तकालयाध्यक्ष,
पुस्तकालय विभाग,
पं.सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय, बिलासपुर
छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश,भारत

सारांश

ई-लर्निंग एक शिक्षा का ऐसा विकल्प है जो साधनों एवं वर्तमान अवरोधो के चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उपलब्ध साधनों से आवश्यक अनुदेशन प्रदान करने का प्रयत्न करती है। ई-लर्निंग यथार्थ सूचना आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिय एक समाधान है। इलेक्ट्रॉनिक संसाधन के बढ़ते हुए अनुप्रयोग ने रंगनाथन के पांचवें सिद्वांत को और सत्य साबित कर दिया है कि ग्रन्थालय एक वर्द्धनशील संस्था है एवं इलेक्ट्रॉनिक संसाधन इसके बढ़ते हुए आयाम है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम प्रत्येक मनुष्य के दिन-प्रतिदिन के क्रिया कलापों का एक जरुरी हिस्सा बनता जा रहा है,शोधार्थी अपनी मनोवांछित सूचना की खोज में गंथालय आता है कुछ सूचना उसे पुस्तकें पत्र- पत्रिकाओं से प्राप्त होती है किंतु डेटाबेस एवं लेटेस्ट सूचना उसे इंटरनेट से सहजता से प्राप्त हो जाती है, इससे शोधार्थी का समय श्रम एवं धन दोनो की बचत होती है।

मुख्यशब्दः इलेक्ट्रॉनिक संसाधन- दूरस्थ शिक्षार्थियों, शिक्षण प्रदान लर्निंग शिक्षा।
Keywords: Electronic Resources.

प्रस्तावना

इलेक्ट्रानिक संसाधन के माध्यम से ज्ञान अर्जित करने वाली शिक्षा है यह प्रगतिषील शिक्षा है, कम्प्यूटर, इंटरनेट इलेक्ट्रॉनिक तकनीकी बेस पर आधारित है यह परम्परागत शिक्षा से बिलकुल भिन्न है इसमे प्रत्येक घटको को नवीन ढ़ंग से सीखने की प्रक्रिया को आत्मसात करना होता है। सर्वप्रथम इसके लिए इंटरनेट का उपयोग करना होता है एवं वातावरण से पूर्ण रुप से परिचित होना होता है, इंटरनेट के माध्यम से अध्यापक तथा विद्यार्थी को एक दुसरे से अधिगम बनाना होता है इसमें छात्र को केन्द्र माना जाता है जबकि परम्परागत शिक्षा मे शिक्षक केन्द्रित रहता है अर्थात ई-लर्निंग मे पाठ्य-सामग्री के विषय में अपना डाउट छात्र शिक्षक को बताता है शिक्षक उसको दुर करने का प्रयत्न करता है जिससे छात्र को स्वयं से पढ़ने की आदत विकसित होती है और यह जीवन पर्यन्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए उचित वातावरण एवं परिस्थितयॉ निर्मित करता है जिससे छात्र अपनी जीवन के किसी भी मोड़ पर षुरु कर सकता है इसमे समय एवं उम्र का बंधन कोइ महत्व नहीं रखता है। समाज से अज्ञानता का अंधकार भी दुर होता है। ई-लर्निंग के लिए यह करना सत्य है कि यह समाज का ज्ञान के लिए वास्तविक अवसर प्रदान करने मे सक्षम है।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य

1. दूरस्थ शिक्षार्थियों की सूचना आवश्यकताओं की जांच करना है।
2. ई-लर्निंग द्वारा अपनी सूचना आवश्यकता को पूरा करने के लिए उपयोग किए जाने वाले सूचना स्रोतों की जांच करना
3. इंटरनेट पर सूचना खोजने की प्रवृति को ज्ञात करना
4. डिजिटल संसाधनो के उपयोग के उदेशय महत्व के संबंध मे पता लगाना

परिकल्पना

1. ई-लर्निंग से पाठक को शिक्षा की नई टेक्नोलॉजी सीखने का अवसर प्रदान करता है।
2. इसमें इंटरनेट एवं शिक्षा दोनो का सम्मिश्रण रहता है।
3. इलेक्ट्रॉनिक संसाधन एवं ई-लर्निंग दोनो एक दुसरे के पुरक है।
4. पाठक की संतुष्टि का पता चलता है।

शोध अध्ययन के क्षेत्र

शोध अध्ययन के लिए बिलासपुर जिला के कुछ छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक को लिया गया है, छात्र एवं शिक्षक दोनो को इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग पर आधारित खोज प्रवृति के प्रभाव एवं जागरुकता के सबंध मे जानने का प्रयास किया गया है।

परिभाषा

रोसनवर्ग के अनुसार

" ई-लर्निंग के माध्यम मे इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा दिया जाता है टेक्नॉलाजी के माध्यम से पाठय-सामग्री का संचार होता है और ज्ञान मे वृद्वि होती है तथा छात्रो के निष्पत्तियो में वृद्धी होती है।"

लार्मिन सारक्क्टस के शब्दों मे

"ई- अधिगम का उपयोग एवं प्रक्रिया का व्यापक क्षेत्र, जैसे वेब आधारित अधिगम तथा वास्तविक कक्ष शिक्षण का शामिल किया जाए। दृष्य श्रव्य टेप, सैटेलाईट प्रसारण, दूरदर्शन, सी. डी. रोम का उपयोग किया जाता है।

इलेक्ट्रॉनिक संसाधन

गंथालय

ग्रन्थलयों में तरह-तरह के प्रलेख, ग्रन्थथ,पत्र-पत्रिकाऐं एवं अन्य डाक्युमेंटस होते है जिसको सुव्यस्थित तरीके से क्रमस्थापन करना अति आवष्यक होता है इसके लिए सबसे प्रथम कार्य वर्गीकरण आवश्यक है। वर्गाकरण के द्वारा समस्त प्रलेख एवं अन्य पाठ्य सामग्री को अपना एक निष्चित स्थान प्रदान किय जाता है, निधानियों एवं सूचियों को विषयवार होने से सहजता से प्राप्त किया जा सकता है इससे नही केवल पाठक का समय बचता है बल्कि सभी पाठय सामग्री का सही उपयोग भी सुगमता से किया जा सकता है इन सब के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की आवष्यकता होती है इन सब का प्रभाव से प्रकाषन क्षेत्र भी अछुता नहीं रह गया है वर्तमान समय मे ई-बुक्स, ई-जर्नल्स का प्रचलन बढ़ गया है यह सोचना सही होगा की वर्तमान समाज पेपर रहित होता जा रहा है एवं गं्थालयो को अब ई-गंथ्रालय का रुप दिया जाने लगा है। ई-ग्रन्थालय का विकास किया जा रहा है जिससे सूचना को नेटर्वक की सहायता से कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में ई-लर्निग के लिए इलेक्ट्रॉनिक संसाधनके प्रति जागरुकता शिक्षक एवं छात्राओं पर किया गया है जो निम्नानुसार है।

शिक्षक एवं छात्रओं द्वारा ई-लर्निग,इलेक्ट्रॉनिक संसाधन के उपयोग से शिक्षण सीखने एवं सीखाने का क्रम।

क्र.	सीखने सीखाने का क्रम	संख्या 200	प्रतिषत
1	प्रति दिवस	38	19%
2	7 दिवस में एक दिन	94	47%
3	15 दिवस में 1 दिन	34	17%
4	एक महीना 1 दिन	34	17%

संख्या (200)

1. प्रथम दिवस
2. 7 दिवस 1 दिन
3. 15 दिवस में 1 दिन
4. एक महीना में 1 दिन

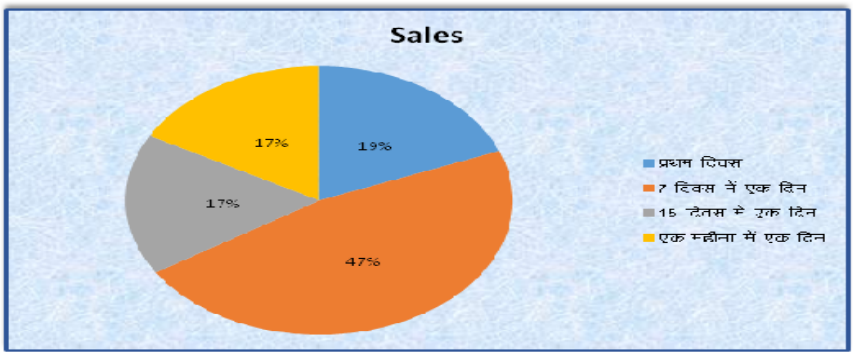

प्राप्त आकड़ो के अनुसार शिक्षक एवं छात्रों द्वारा सीखनें एवं खोजने की प्रवृति सप्ताह में एक दिन सबसे अधिक 47ः है। प्रति दिवस 19ः है, 15 दिवस एवं महीने में 17-17ः सीखने की प्रवृति पाई गई है

ई-लर्निग एवं इलेक्ट्रॉनिक संसाधन संसाधनो के उपयोग शिक्षक एवं छात्रों की संतुष्टि

क्र	सतुष्टि का क्रम	संख्या 200	प्रतिषत
1	पूर्ण संतुष्ट	30	15 %
2	संतुष्ट	46	23 %
3	कम संतुष्ट	90	45 %
4	असंतुष्ट	37	17 %

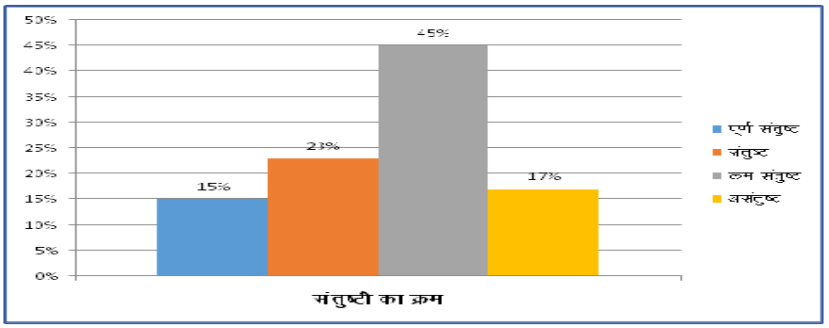

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक एवं छात्र पूर्ण संतुष्ट 15%, है।सतुंष्ट 23% है, कम संतुष्ट 45% है। असंतुष्ट 17% है।

ई-लर्निग- एवं इलेक्ट्रॉनिक संसाधन के उपयोग का उद्वेष्य

क्र.	सीखने सीखने का क्रम	संख्या 200	प्रतिषत
1	अध्ययन के लिये	34	17%
2	सीखने के लिये	25	12.5%
3	मनोरंजन क लिये	50	25%
4	नवीन ज्ञान प्राप्ति के लिये	91	45.5%

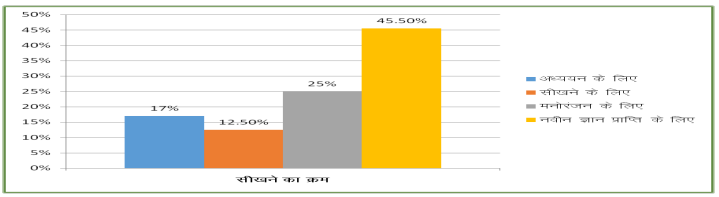

प्रस्तुत आकड़ो अध्ययन के उद्देश का प्रतिशत 17% है। सीखने का उद्देश 12.5% है, मनोरंजन के उद्देश का प्रतिशत 52% है, नवीन ज्ञान प्राप्ति के उद्देश का प्रतिशत 45.5% है।

निष्कर्ष

ई-लर्निग एव इलेक्टॉनिक संसाधन के सहयोग से ज्ञान को कम समय में किसी भी स्थान से छात्र एवं शिक्षक एक दुसरे से सम्पर्क कर सकते है, एवं ई-बुक्स, ई- जर्नल्स से सहजता से सूचना प्राप्त कर सकते है। जिसके माध्यम से राष्ट्र के विकास का नई दिषा प्राप्त होगी । ई-लर्निग पाठक के समय एवं नये प्रयासो का एक निवेश मात्र प्रतीत होता है जिससे छात्र एवं शिक्षक दोनो में ही नवीन कौशल विकास का एक उत्तम प्रयास है। वर्तमान समय की आवष्यकता को ध्यान में रखते हुए ई-लर्निग,एवं इलेक्ट्रॉनिक संसाधनो के माध्यम से षिक्षण की नई टेक्नोलॉजी से शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनो को पुरी तरह से आत्मसात करने की जरुरत है। यह भी कहा जा सकता है की ई-लर्निंग दूरस्थ मध्यम से शिक्षा प्रदान करने का एक बेहतर माध्यम है कुछ कारण संसाधनो का अभाव है अथवा पूर्ण रुप से टेक्नोलॉजी ज्ञान नही होना है।

कुछ शिक्षक एवं छात्रों द्वारा प्राप्त सूचना से ज्ञात हूआ कि सभी स्थान पर नेटवर्क का सुचारु रुप नहीं पहुँचना भी है ।

ग्रन्थसूची

1. *ALI (N) (2005) the Use of Electronic Resources at IIT Delhi Library; a study of search behaviours. The Electronic Library 23 .*
2. *National digital Library of India https://ndl.iikgp.ac.in.*
3. *https://swayam.gov.in accessed on 1-9-2017.*
4. *ग्रंथालय विज्ञान 2017, खण्ड 48*
5. *Library Herald vol 57, page no 402 |*
6. *Indian Journal of Open Learning , vol. 27 page no 55*